Subject :- Sociology Date :- 11/07/2020
Class :- D-I (Subsidiary)
Topic :- समाजीकरण के अभिकरण / साधन
By :- Dr. S. N. Choudhary, Guest Teacher, Marwari College, Darbhanga, O.S. Material No:- 110

एक बच्चा के समाजीकरण में विभिन्न संस्थाएँ और समूह महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं जो संस्थाएँ और समूह एक व्यक्ति के समाजीकरण में योगदान देते हैं उन्हें ही समाजीकरण के साधन कहा जाता है। समाजीकरण के प्रमुख साधन निम्नांकित हैं :-

(1) परिवार → परिवार एक सार्वभौमिक संस्था है और सर्वप्रथम हमारा सम्पर्क परिवार के सदस्यों से ही होता है अतः प्रायः सभी समाजों में परिवार समाजीकरण का एक प्रमुख साधन माना जाता है। परिवार में भिन्न-भिन्न रुचि और स्वभाव वाले व्यक्ति होते हैं। एक बच्चा उन सभी के साथ अनुकूलन का गुण सीखता है। साथ ही यह भी कहा जा सकता है कि बच्चा परिवार में सबसे छोटा होता है। अतः उसे दूसरों की बातें या व्यवहारों को सहना पड़ता है। फलस्वरूप उसमें सहनशीलता का गुण विकसित होता है। साथ ही छोटा होने के कारण उसे बड़ों की आज्ञाओं का पालन करना पड़ता है। इससे उसमें आज्ञाकारिता का गुण विकसित होता है। सर्वप्रथम परिवार में ही बच्चे को शिक्षा प्राप्त होती है कि क्या करना अच्छा है और क्या करना बुरा है उसे क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए, अपने से बड़ों और छोटों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए आदि। परिवार में ही बच्चा सामाजिक उत्तरदायित्व का अर्थ, क्षमा का महत्व और सहयोग की उपयोगिता का पाठ सीखता है। परिवार में माता-पिता, भाई बहन आदि के प्रेम, सद्भावना, सहानुभूति इत्यादि से बच्चे के मानसिक विकास में मदद मिलती है। इसके अतिरिक्त परिवार ही वह आधारभूत संस्था है जहाँ बालक को नागरिकता का प्रथम पाठ पढ़ाया जाता है। परिवार में ही बच्चा खान-पान, वस्त्र धारण करने, अभिवादन करने, धार्मिक संस्कारों और जातिय नियमों का पालन करना सीखता है। साथ ही वह अपने पारिवारिक आदर्शों और मूल्यों को सीखता है। फलस्वरूप पारिवारिक आदर्श और मूल्य बच्चों के भी आदर्श और मूल्य बन जाते हैं। परिवार में ही बच्चे प्रेम, प्यार, बलिदान, सहयोग, दया, क्षमा, परोपकार, देशप्रेम, भ्रातृत्व भाव, सहिष्णुता, अहिंसा, समानता आदि गुणों को सीखता है। यही कारण है कि परिवार को शीशु की प्रथम पाठशाला कहा जाता है।

कभी-कभी बच्चा अनुकरण की प्रक्रिया द्वारा दूसरों द्वारा किए जाने वाले व्यवहारों को सीखता है और कभी कभी सुझाव रूपी कारक द्वारा समाजीकृत होता है। साथ ही यह भी कहा जा सकता है कि परिवार पुरस्कार और दंड रूपी कारक द्वारा बच्चों का समाजीकरण करता है। यदि बच्चे अच्छा कार्य करते हैं, अपने से बड़ों की आज्ञाओं का पालन करते हैं और उनके सुझाव के अनुरूप व्यवहार करते हैं तो उन्हें पुरस्कार देकर अच्छा व्यवहार करने के लिए प्रेरित

Scanned with CamScanner

किया जाता है। इसके विपरीत यदि वे अच्छा व्यवहार नही करते हैं तब परिवार के सदस्य उन्हे दंड देकर उचित व्यवहार प्रदर्शित करने के लिए बाध्य करते हैं। यहाँ यह वर्णन करना आवश्यक प्रतीत होता है कि यह आवश्यक नही की पुरस्कार कोई मूर्त वस्तु ही हो। पुरस्कार केवल मुस्कान एवं मीठे शब्द भी हो सकते है। इस सम्बन्ध में H.M. Johnson ने भी लिखा है "पुरस्कार और दंड आवश्यक नही कि योजार्थिक रूप में आए, एक मुस्कराहट अधिक प्रभावशाली हो सकती है अपेक्षाकृत एक रूपसे की मिठाई के टुकड़े के।"

यद्यपि व्यक्ति आजीवन समाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा प्रभावित होता रहता है, किंतु बचपन के दिनो में वह जो कुछ सीखता है उसका प्रभाव उसके समाजीकरण पर अधिक पड़ता है। इस सम्बन्ध में Kimball young ने भी लिखा है "इस सम्बन्ध में साधारणतः यह विश्वास किया जाता है कि प्रारंभिक समाजीकरण ही मौलिक एवं अधिक आधारभूत होता है, अपेक्षाकृत किसी अन्य प्रकार के सीखने के जो बाद में सीखा जाता है।" चूंकी प्रारंभ में व्यक्ति परिवार की संस्था में ही सभी अच्छे गुणों को सीखता है, अतः बच्चों के समाजीकरण में परिवार का योगदान महत्वपूर्ण होता है। इस सम्बन्ध में H.M. Johnson ने भी लिखा है " परिवार विशेष रूप से इस प्रकार संगठित रहता है जो समाजीकरण को संभव बनाता है।" (The family in particular is organised in such a way as to make Socialization possible)

कुछ विद्वान ने समाजीकरण में परिवार के महत्व को स्पष्ट करते हुए यहाँ तक विचार दिया है कि समाजीकरण के विभिन्न साधनों में परिवार सर्वप्रमुख स्थान रखता है और परिवार में बच्चा के समाजीकरण में अन्य सदस्यों की तुलना में माता-पिता का योगदान अधिक रहता है। इस तथ्य की पुष्टि करते हुए Kimball young ने लिखा है "समाज के अन्तर्गत समाजीकरण के विभिन्न माध्यमों में परिवार सबसे अधिक महत्वपूर्ण है और इसमें कोई संदेह नही की परिवार के अन्तर्गत माता-पिता ही साधारणतया अत्यधिक महत्वपूर्ण व्यक्ति है" (The various agents of Socialization within Society, the family is the most important & within the family there is no doubt that the mother & father are ordinarily the most significant individuals)

(2) खेल का समूह → समाजीकरण की दृष्टि से बच्चों के लिए मित्रों का समूह या खेल समूह एक महत्वपूर्ण प्राथमिक समूह है। जब बच्चा थोड़ा सा बड़ा होकर घर से बाहर कदम रखता है तब उसका सम्पर्क अन्य बच्चों से होता है और वह उसके साथ खेलता है। ये बच्चे अलग - अलग परिवार के होते है और उनके व्यवहार के ढंग भी अलग- अलग होते है। इन विविधताओ के बीच बच्चा खेल- खेलने के साथ-साथ अनुकूलन की कला और

मिलकर काम करने की आदत सीखता है। साथ ही वह खेल के नियमों का पालन करने का गुण सीखता है। इस तरह उसमें अनुशासन पालन का गुण विकसित होता है। वह खेल में हार-जीत होने पर परिस्थितियों से अनुकूलन करने का गुण सीखता है। रीजमैन ने खेल समूह को वर्तमान समय में समाजीकरण करने वाला एक महत्वपूर्ण समूह बताया है।

(3) पड़ोसी तथा अन्य बड़े-बूढ़ों का समूह → पड़ोसी एवं अन्य बड़े-बूढ़े भी बच्चों के समाजीकरण में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। बच्चे अनजाने में भी पड़ोसियों से कई अच्छी बातें सीख लेते हैं। पड़ोसी प्रशंसा और निन्दा द्वारा बच्चों को समाज द्वारा स्वीकृत व्यवहारों को करने के लिए प्रेरित करते हैं।

(4) शिक्षण संस्थाएँ → शिक्षण संस्थाएँ में बच्चे विद्यालय और महाविद्यालय के शिक्षकों तथा सहपाठियों के सम्पर्क में आते हैं। बच्चों के लिए शिक्षक एक आदर्श का कार्य करते हैं। शिक्षकों द्वारा प्राप्त उपदेश तथा सुझाव बच्चों के समाजीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। साथ ही वह अपनी कक्षा के अन्य साथियों से भी बहुत सी बातों को सीखता है। वह जिस प्रकार के छात्रों की संगति में रहता है, उसी के अनुरूप उसका समाजीकरण होता है।

(5) धार्मिक संस्थाएँ → धार्मिक संस्थाएँ बुरे कार्य करने वालों को इहलोक और परलोक, दोनों को बिगाड़ने का भय दिखाकर और अच्छे कार्यों को करने पर अच्छे फल की आशा दिखाकर व्यक्तियों में मानवोचित गुणों को विकसित करने में सहायक सिद्ध होती है। धर्म, पाप और पुण्य की धारणा विकसित कर पाप कर्मों को करने से दूर रहने और पुण्य कर्मों को करने की प्रेरणा देकर सफल समाजीकरण में योगदान देता है। हिन्दू धर्म स्वर्ग और नरक तथा कर्मफल की धारणा प्रस्तुत कर हमारे समाजीकरण में योगदान देता है।

(6) राजनीतिक संस्थाएँ → राजनीतिक संस्थाएँ व्यक्ति को कानून, अधिकारों एवं कर्तव्यों का बोध कराकर समाजीकरण में योगदान देती है। यहाँ यह लिखना आवश्यक प्रतीत होता है कि तानाशाही एवं प्रजातांत्रिक शासन में भिन्न-भिन्न प्रकार से बच्चों का समाजीकरण होता है।

(7) आर्थिक संस्थाएँ → आर्थिक संस्थाएँ व्यक्ति को जीवन-यापन के लिए समर्थ बनाती है। ये संस्थाएँ व्यक्ति को व्यावसायिक संघो से परिचित कराती है और व्यक्ति में प्रतिस्पर्द्धा, सहयोग एवं समायोजन के भाव पैदा करती है। इन्ही संस्थाओं के माध्यम से व्यक्ति ईमानदारी और बेईमानी के गुणों को सीखता है। marx & veblen ने एक व्यक्ति के समाजीकरण में आर्थिक संस्थाओं को बहुत महत्व प्रदान किया है। (8) विवाह की संस्था → इसके बारे में आप स्वयं लिखें?

S. N. Choudhary
[illegible]
L.N.M.U